अनादि अनिधन
जिनागम पंथ जयवंत हो

# विमर्श लिपि

लिपि सृजक– श्रमणाचार्य विमर्शसागर

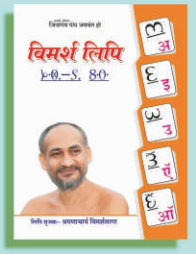


भाषा स्थैर्य के लिए शब्दांकन अनिवार्य हेतु है। शब्दांकन, बिना वर्ण व्यवस्था के संभव नहीं है।

वर्णों की विभिन्न आकृतियाँ जो ध्वनियों को वर्णबद्ध करती हैं लिपि नाम से जानी जाती हैं, भारतीय तत्त्वमनीषा में लिपियों का इतिहास अति प्राचीन है। कर्मयुगारंभ में भगवान ऋषभदेव ने अपनी पुत्रियों के लिए सर्वप्रथम लिपि विद्या का ज्ञान दिया। उनकी ज्येष्ठ पुत्री ब्राह्मी के नाम से अद्यतन ब्राह्मी लिपि लोक विश्रुत है। समय-समय पर लिपियों की वर्णाकृतियों में परिवर्तन होता रहा है और समयानुसार नई लिपियों का सृजन हुआ। लगभग 400 से अधिक प्राचीन लिपियों का उल्लेख इतिहास वृत्त में निहित है। लेकिन इतिहास में अद्यतन यह ज्ञात नहीं है कि लिपि सृजन के क्षेत्र में किन्हीं दिगम्बर जैन योगियों ने अपनी लेखनी चलाई हो। चातुर्मास-2011, अशोकनगर (म.प्र.) में **'जीवन है पानी की बूँद'** (महाकाव्य) एवं **'विमर्श एम्बिसा'** जैसी विश्व स्तरीय कृतियों के सृजक परम पूज्य जिनागम पंथ प्रवर्तक भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज के द्वारा जब स्वप्रेरणा से **'विमर्श लिपि'** का सृजन हुआ तो इतिहास ने करवट ली और प्रथम लिपि सृजक के रूप में दिगम्बराचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज का नाम ख्यात हुआ।

आचार्य श्री द्वारा सृजित यह लिपि, लेखन में अति सुगम है, वर्ण व्यवस्था इस प्रकार से रचित है कि शीघ्र स्मृतिकोष में समाहित हो जाती है।

देवकुल से वंद्य यथाख्यात जिनचर्या के सुपालक पूज्य आचार्य प्रवर की नई सोच, नया प्रयोग... **'विमर्श लिपि'** सुधी पाठकों के लिए सहर्ष प्रस्तुत है।

**-प्रकाशक**

**विमर्श फॉन्ट के लिये**
**SCAN QR CODE**

श्री शान्तिनाथ भगवान
(अहार जी के बड़े बाबा)

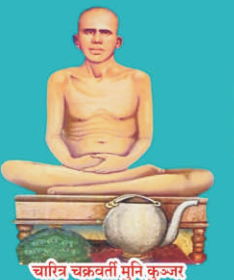

चारित्र चक्रवर्ती मुनि कुञ्जर
आचार्य श्री 108 आदिसागर जी महामुनिराज

तीर्थभक्त शिरोमणि, समाधि सम्राट
आचार्य श्री 108 महावीरकीर्ति जी महामुनिराज

## जिनागम पंथ अनुगामी वंदनीय आचार्य परम्परा

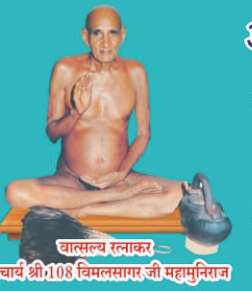

वात्सल्य रत्नाकर
आचार्य श्री 108 विमलसागर जी महामुनिराज

तपस्वी सम्राट आचार्य
श्री 108 सन्मतिसागर जी महामुनिराज

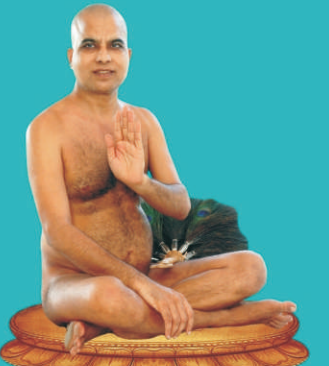

परम पूज्य युग प्रतिक्रमण प्रवर्तक, शुद्धोपयोगी संत
सूरिगच्छाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महामुनिराज

"जीवन है पानी की बूँद" महाकाव्य के मूल रचयिता, "विमर्श लिपि" के सृजेता,
जिनागम पंथ प्रवर्तक, अहार जी के छोटे बाबा, प.पू. आदर्श महाकवि, राष्ट्रयोगी
भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज

जिनागम पंथ ग्रंथमाला : ग्रंथांक–17 (3)

(स्वर्णिम विमर्शोत्सव एवं रजत संयमोत्सव वर्ष–2022–24 की मंगल प्रस्तुति)

# विमर्श लिपि



लिपि सृजक

श्रमणाचार्य विमर्शसागर

जिनागम पंथ प्रकाशन

## ज्ञानावरण कर्म के आस्रव का कारण

**.. शास्त्र विक्रय.. ज्ञानावरणस्यास्रवा: श्रुतात्स्याच्छ्रुतकेवली।**

**शास्त्र विक्रय ज्ञानावरण कर्म के आस्रव का कारण है तथा शास्त्रदान से श्रुतकेवली होता है ऐसा आगम वाक्य है।**

**जिनागम पंथ ग्रंथमाला से प्रकाशित श्रुत साहित्य का विक्रय नहीं किया जाता। सभी स्वाध्यायी जीवों के लिए नि:शुल्क उपलब्ध कराया जाता है।**


**जिनागम पंथ ग्रंथमाला : ग्रंथांक–17 (3)**

| | | |
|---|---|---|
| **कृति** | : | विमर्श लिपि |
| **शुभाशीष** | : | प.पू. शुद्धोपयोगी संत सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज |
| **लिपि सृजक** | : | प.पू. भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज |
| **समावलोकन** | : | श्रमण विव्रतसागर |
| **प्रस्तुति** | : | बा.ब्र. विशु दीदी |
| **प्रकाशक** | : | जिनागम पंथ ग्रंथमाला |
| **ISBN No.** | : | 978-93-341-5262-3 |
| **संस्करण** | : | 15 नवम्बर 2024 (वी.नि. सं. 2551) |
| **तृतीयावृत्ति** | : | 2000 प्रति |



© **जिनागम पंथ प्रभावना फाउंडेशन**



**प्राप्ति स्थान :**

- **जिनागम पंथ ग्रंथालय**
  बड़ा जैन मंदिर, बाराबंकी (उ.प्र.)
  नमन जैन मो. 9160855511
- **जिनागम पंथ ग्रंथालय**
  छिंदवाड़ा (म.प्र.)
  मो. 9425146667
- **जिनागम पंथ ग्रंथालय**
  श्री महावीर दि. जैन मंदिर
  श्रमणपुर, लखनादौन (म.प्र.)
  मो. 9425146667
- **राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच**
  भिण्ड (म.प्र.)
  मो. 9826217291
- **डॉ. विश्वजीत कोटिया**
  आगरा (उ.प्र.)
  मो. 9412163166
- **अरिन्जय जैन**
  दिल्ली
  मो. 9810099002

**मुद्रक :**
**ज्योति ग्राफिक्स, किशनपोल, जयपुर**
मो. 8290526049, 8619727900

# विमर्श लिपि : एक अभिनव प्रयोग

भाषा भावों की प्राणशक्ति व विचारों की संवाहिका है, भाषा ही मानव मानव के मध्य वैचारिक सेतु है। विश्व के सभी क्षेत्रों की अपनी-अपनी भाषा, उपभाषा, बोलियाँ हैं। लगभग 2000 भाषाएँ विश्व में प्रचलित हैं। भाषा के महत्त्व के विषय में लिखा है-

इमन्धतमः कृत्सनं जामेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दावृषयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।।

(दण्डी: काव्यादर्श 1-4)

यदि सृष्टि के आरम्भ में भाषा (शब्द) की ज्योति न जलती होती तो यह त्रिभुवन घोर अन्धकार में निमग्न हो जाता।

भाषा ध्वनिरूपा होती है, इसकी ध्वनि लहर शून्य में विलीन होती है और मस्तिष्क में सुरक्षित रहती है, स्मृति-कोष में प्रचुर तत्त्वों को सुरक्षित रखना संभव नहीं है इसके स्थायित्व एवं संप्रेषणीयता के लिये माध्यम है लिपि।

जैन आगम में भगवान ऋषभदेव द्वारा अपनी पुत्री ब्राह्मी को अक्षर विद्या देने का उल्लेख है। कालान्तर में उन्हीं के नाम से प्राचीन लिपि ब्राह्मी लिपि प्रख्यात है। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने ब्राह्मी लिपि को चमत्कार कहा है। ललित विस्तार में कहा गया है कि बोधिसत्त्व ने 64 लिपियाँ सीखी थीं जिसमें ब्राह्मी एवं खरोष्ठी का भी उल्लेख है।

रघुवंश में कालिदास लिखते हैं -

''लिपेर्यथावद् ग्रहणेन वाङ्मय नदी मुखेनेव समुद्रमाविशत्''

अर्थात् लिपि के यथावत् ग्रहण (ज्ञान) से वाङ्मय तक उसी प्रकार पहुँचा जाता है जैसे नदी के द्वारा समुद्र तक पहुँचा जाता है।

वही लिपि विकसित, ग्राह्य व प्रामाणिक होती है जिसमें स्वर और व्यंजनों के सुव्यवस्थित चिन्हों द्वारा वर्गमाला की सभी मूलभूत ध्वनियों का स्पष्ट विभाजन हो। स्वर व्यंजन का क्रम वैज्ञानिक हो, शब्द अपेक्षाकृत कम स्थान घेरता हो, संयुक्त व्यंजन भी स्पष्ट रूप से उच्चारित हो, कम से कम में आधारभूत विशेषता हो, साथ ही व्याकरण समानता के साथ उच्चारण गत रूप के साथ एकरूपता भी हो। लिपि में इनके वैविध्य से ही अनेक सहयोग लिपियों का विकास हो जाता है।

देवनागरी लिपि यद्यपि अति प्राचीन है। विद्वानों ने इसके लक्षण बोधगया के महानतम् शिलालेख और लेख मण्डल की प्रशस्ति में (588 ई.) में पाये हैं। समय-समय पर इसका परिष्कार

हुआ है। नये चिन्हों का विधान हुआ है, लोकमान्य तिलक ने 1904 में लिपि सुधार के कार्य का श्रीगणेश किया था, सन् 1935 में ''नागरी लिपि सुधार'' समिति का गठन हुआ था, 1953 में इस समिति के द्वारा प्रस्तुत सिफारिशों को उत्तर प्रदेश सरकार ने स्वीकार भी किया था। इस प्रकार लिपि के क्षेत्र में लिपि को सर्वप्रकारेण व्यावहारिक होना आवश्यक हो जाता है।

दीर्घावधि से लिपि के क्षेत्र में नगण्य ही कार्य हुआ है, आचार्य श्री विमर्शसागर जी द्वारा विमर्श लिपि का आविष्कार सन् 2011 में अशोकनगर में किया गया। जब प्रारम्भ में मुनिश्री द्वारा प्रेषित इस लिपि का व्यावहारिक प्रयोग मैंने देखा एवं सन् 2012 में प.पू. सूरिगच्छाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महामुनिराज के स्वर्णिम जन्मोत्सव वर्ष पर प्रकाशित इस कृति के प्रथम संस्करण को देखा तो सुखद आश्चर्य हुआ। इससे पूर्व लिपि के क्षेत्र में श्रमण परम्परा में कहीं कोई कार्य मुझे दृष्टिगत नहीं हुआ इस लिपि को देखा तो पाया जो अभाव **ऍ** एवं **ऑ** का देवनागरी लिपि में था इनके लिये ह्रस्व रूप तो है पर अलग चिन्ह नहीं हैं, आचार्य श्री ने उसको भी सम्मिलित किया है, रेफ युक्त संयुक्त वर्ण, चिन्ह, अंक सभी का समावेश है तथा अक्षर की बनावट सरल व आकर्षक है, जैसे-राम जाता है। (ɥ..Ø. b..T.. Hᵓ।)

लिपि का निर्माण व्यापक, गहन भाषा ज्ञान, व्याकरण एवं विविध क्षेत्रों के प्रचलित शब्द ज्ञान की अपेक्षा रखता है। लिपि का प्रचलन इसी पर निर्भर है कि वह शब्दों के साथ कितनी साम्यता रखती है।

पूज्य आचार्य श्री ने विमर्श लिपि के माध्यम से लिपि के सूक्ष्मतम विज्ञान को विकसित किया है। इसकी प्रतिध्वनि में एक मौलिकता परिलक्षित हुई है। इस लिपि का व्यापक प्रचार-प्रसार होगा। लिपि क्षेत्र में इस प्रकार का प्रथम प्रयास अभिनन्दित व सर्वमान्य होगा, ऐसा विश्वास है। इससे जैन संस्कृति के कुछ विशिष्ट रचना तत्त्व विकसित होंगे।

आचार्य श्री की नवोन्मेषी, सृजनधर्मी रचना शक्ति को नमन, आचार्य श्री का श्रमशील पुरुषार्थी प्रयास अभिनन्दनीय, श्लाघनीय है। शत्-शत् नमन्।

विनयावनत

**डॉ. नीलम जैन**
H-210, डैफोडिलर, मगरपट्टा, पुणे
drneelamjain26@gmail.com

परिचय की वीथिकाओं में

# भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

## लौकिक यात्रा

| | | |
|---|---|---|
| पूर्व नाम | : | श्री राकेश कुमार जैन |
| पिता | : | पं. श्री सनत कुमार जैन (दो प्रतिमाधारी, समाधिस्थ) |
| माता | : | श्रीमती भगवती जैन (आपके ही कर कमलों से दीक्षित एवं समाधिस्थ पू. आर्यिका विहान्तश्री माताजी) |
| जन्म स्थान | : | जतारा, जिला-टीकमगढ़ (म.प्र.) |
| जन्म तिथि | : | मार्गशीर्ष कृष्णा पंचमी सं. 2030 |
| जन्म दिनांक | : | 15 नवम्बर, 1973 दिन : गुरुवार |
| शिक्षा | : | बी.एस.सी. (बायलॉजी) |
| भ्राता | : | दो (अग्रज-राजेश जैन, अनुज-चक्रेश जैन) |
| भगिनी | : | दो (अग्रजा-श्रीमती कमला जैन, अनुजा-बा.ब्र. महिमा दीदी (संघस्थ) |
| विवाह | : | बाल ब्रह्मचारी |
| खेल | : | बैडमिंटन, शतरंज (विशेषता—दोनों खेल जिनसे सीखे उन्हीं के साथ फाईनल खेलते हुए चैंपियन कप विजेता) |
| सामाजिक सेवा | : | मंत्री— श्री दिगम्बर जैन नवयुवक संघ, जतारा |
| रुचि | : | अध्ययन, संगीत, पेंटिंग |
| सांस्कृतिक रुचि | : | अनेक धार्मिक, सामाजिक नाट्य मंचन |
| करुणा भाव | : | बचपन में एक गरीब अंधे भिखारी को अक्सर पैसे दान देना। |

m—·H.OT.

(अरिहंत)



अ

देवनागरी लिपि

m

विमर्श लिपि



m0..—.

(अनार)

m9..—Y.

(आचार्य)



आ

देवनागरी लिपि

ṃ

विमर्श लिपि



ṃ0.

(आम)

ε0+−.

(इन्द्र)

इ

देवनागरी लिपि

ε

विमर्श लिपि

εØ.8··

(इमली)



ε:S৮.−.

(ईश्वर)

ई

देवनागरी लिपि

ε:

विमर्श लिपि

ε:\.

(ईख)

ω0..XY..Y.

(उपाध्याय)



उ

देवनागरी लिपि

ω

विमर्श लिपि

ω88¨

(उल्लू)

ώ–b.Y.0T.l·–¨

(ऊर्जयन्तगिरी)



ऊ

देवनागरी लिपि

ώ

विमर्श लिपि

ώ0.

(ऊन)

3~S.0.0..L.

(ऋषभनाथ)



ऋ

देवनागरी लिपि



3~

विमर्श लिपि

3~S·

(ऋषि)

3/ᵓ0+–·Y.

(एकेन्द्रिय)




ए

देवनागरी लिपि

3

विमर्श लिपि

37..

(एड़ी)

/˘O9·O.

कॅप्चिन (मानस्तम्भ)

# ऍ

देवनागरी लिपि

380..

ऍल्बी (गिलहरी)

# 3̆

विमर्श लिपि

38./.

(ऐलक)

# ऐ

देवनागरी लिपि

30./.

(ऐनक)



# 3

विमर्श लिपि

ɛ0.

(ओम)

ओ

देवनागरी लिपि

ɛ

विमर्श लिपि



ɛ\.8··

(ओखली)

ɛ̆I.

ऑड (वंदना)

ऑ

देवनागरी लिपि

ɛ̆

विमर्श लिपि

ɛ̆S7.

ऑस्ट (वृद्ध)

## ƐS.X·+..O.

(औषधिदान)

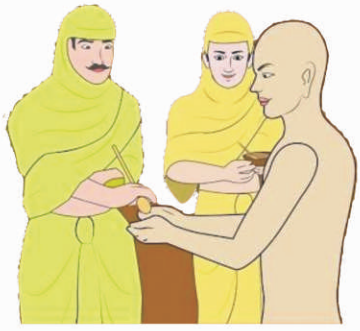



औ

देवनागरी लिपि

Ɛ

विमर्श लिपि

## Ɛ–.T.

(औरत)

## ꝏT.–..T⊗..

(अंतरात्मा)

अं

देवनागरी लिपि

ꝏ

विमर्श लिपि

## ꝏ|¨–.

(अंगूर)

अः

देवनागरी लिपि

ಃ

विमर्श लिपि

/.Ø.VT.8.

(कमण्डल)

क

देवनागरी लिपि

/.

विमर्श लिपि

/.Θ¨T.–.

(कबूतर)

\.TI..S.O.

(खड्गासन)

ख

देवनागरी लिपि



\.

विमर्श लिपि

\.–.I^c S.

(खरगोश)

I.OX^c+./.

(गंधोदक)

ग

देवनागरी लिपि

I.

विमर्श लिपि



I.Ø.8..

(गमला)

(घ्राण इन्द्रिय)



# घ

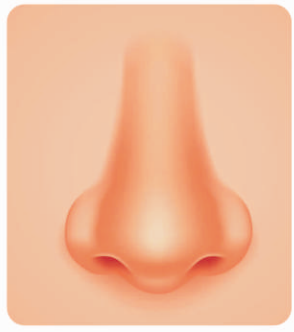

देवनागरी लिपि





विमर्श लिपि

(घड़ी)

# ङ

देवनागरी लिपि



विमर्श लिपि

9.⊗.–.

(चमर)



# च

देवनागरी लिपि

# 9.

विमर्श लिपि



9.–.\..

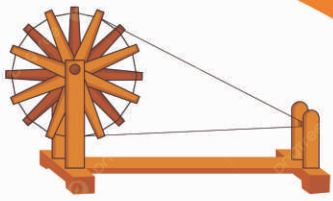

(चरखा)

ए.Ŧ.

(छत्र)

# छ

देवनागरी लिपि

# ए.

विमर्श लिपि

ए.T.–..

(छतरी)

b·0.৮..V··

(जिनवाणी)

ज

देवनागरी लिपि

b.

विमर्श लिपि



b.H..b.

(जहाज)

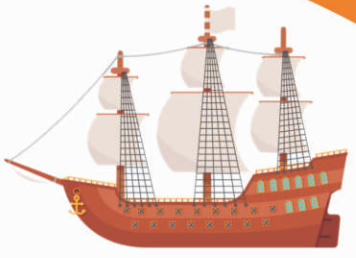

q..—··

(झारी)

झ

देवनागरी लिपि

q.

विमर्श लिपि



q.VT..

(झण्डा)

अ

देवनागरी लिपि

þ.

विमर्श लिपि

7ᶜ</.

(टोंक)

ट

देवनागरी लिपि

7.

विमर्श लिपि

7.Ø.7.Ø.

(टमटम)

(ठोना)



ठ

देवनागरी लिपि



विमर्श लिपि





(ठठेरा)

(डिब्बी)



ड

देवनागरी लिपि



विमर्श लिपि





(डमरु)

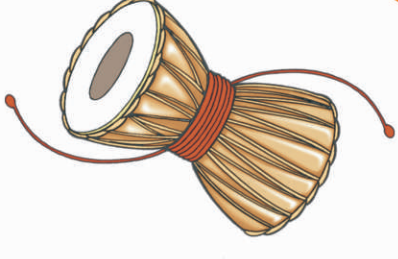

Λᶜ<ŀ··

(ढोंगी)

ढ

देवनागरी लिपि

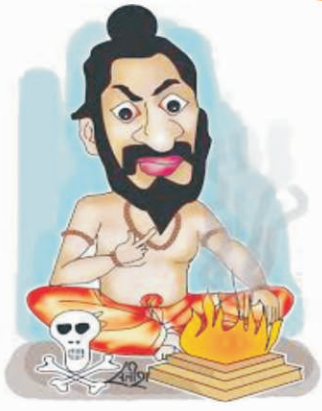



Λ.

विमर्श लिपि

Λ.0.8··

(ढपली)

V.Ø ᶜ/..−.

(णमोकार)

ण

देवनागरी लिपि

V.

विमर्श लिपि

T¨–L.</.–.

(तीर्थंकर)

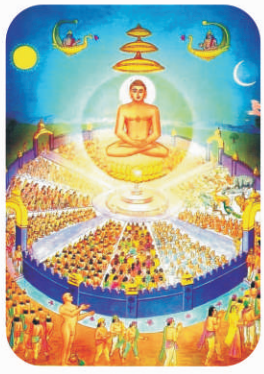

त

देवनागरी लिपि

T.

विमर्श लिपि

T.–.θ¨b.

(तरबूज)

L..8¨

(थाली)

थ

देवनागरी लिपि

L.

विमर्श लिपि

L.–.Ø.S.

(थरमस)

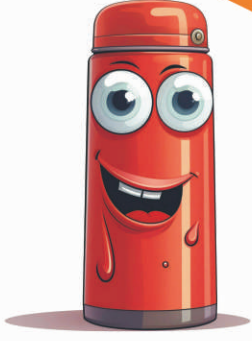

+ᒣ𝑝.

(देव)



द

देवनागरी लिपि

+.

विमर्श लिपि



+.−b¨

(दर्ज़ी)

X𝑝.b.

(ध्वज)



ध

देवनागरी लिपि

X.

विमर्श लिपि



X.0˙S.

(धनुष)

0.–./.

(नरक)

न

देवनागरी लिपि

0.

विमर्श लिपि

0.8.

(नल)

0·9९··

(पिच्छी)

प

देवनागरी लिपि

0.

विमर्श लिपि

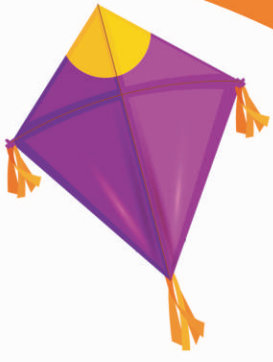

0.T.<।.

(पतंग)

Q.8.—..S·

(फलराशि)

फ

देवनागरी लिपि

Q.8.

(फल)

Q.

विमर्श लिपि

θ—.HX.9..—··

(ब्रह्मचारी)

ब

देवनागरी लिपि

θ.T.\.

(बतख)

θ.

विमर्श लिपि

0..0.VT.8.

(भामण्डल)



भ

देवनागरी लिपि

0.

विमर्श लिपि

0..8¨

(भालू)

0.0+‥–.

(मंदिर)



म

देवनागरी लिपि

0.

विमर्श लिपि



0.9.8‥

(मछली)

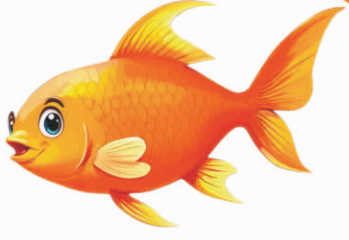

Y.0F.

(यंत्र)

य

देवनागरी लिपि

Y.

विमर्श लिपि

Y.bp.

(यज्ञ)

—.H.8.

(रहल)

र

देवनागरी लिपि

—.

विमर्श लिपि

—.L.

(रथ)

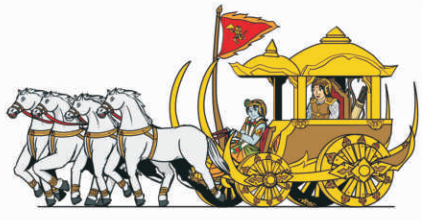

8ᶜ/.

(लोक)

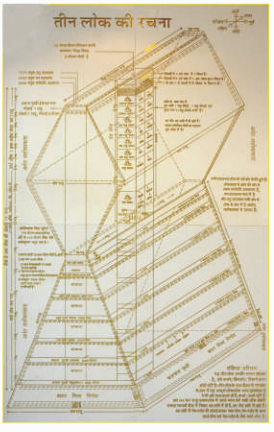




ल

देवनागरी लिपि

8.

विमर्श लिपि



8.77¨

(लट्टू)

ዖ.b–.+.VT.

(वज्रदण्ड)

व

देवनागरी लिपि

ዖ.

विमर्श लिपि



ዖ.0.

(वन)

S..0T·X..–..

(शान्तिधारा)

श

देवनागरी लिपि

S.

विमर्श लिपि

S.T.–.þb.

(शतरंज)

S.7\.V7..I.Ø

(षट्खंडागम्)

ष

देवनागरी लिपि

S.

विमर्श लिपि

S.7/ᶜV.

(षट्कोण)

S..X¨

(साधू)

स

देवनागरी लिपि



S.

विमर्श लिपि

S.O⁾—..

(सपेरा)

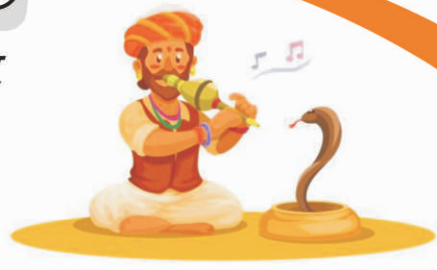

H—··Ø

(ह्रीं)

ह

देवनागरी लिपि

H.

विमर्श लिपि

H.8.ゝ..E:

(हलवाई)

(क्षुल्लक)



क्ष

देवनागरी लिपि

विमर्श लिपि





(क्षत्रिय)

(त्रस)



त्र

देवनागरी लिपि

विमर्श लिपि



(त्रिशूल)

bp..Y./.

(ज्ञायक)

ज्ञ

देवनागरी लिपि

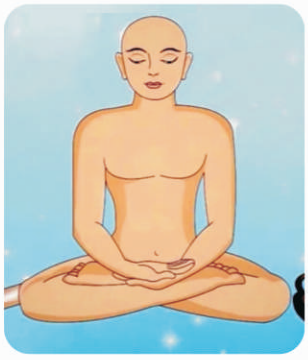

bp.

विमर्श लिपि

bp..0··

ज्ञानी

§..p./.

(श्रावक)

श्र

देवनागरी लिपि

§.

विमर्श लिपि

§.⊗·/.

(श्रमिक)

ड़ 

ॠ 

ऌ 

ढ़ 

ॡ 

# विमर्श लिपि

| | अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विमर्श लिपि (स्वर) | | | | | | | |
| विमर्श लिपि (स्वर मात्रा) | | | |  |  |  |  |

| | ऍ | ऐ | ओ | ऑ | औ | अं | अः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विमर्श लिपि (स्वर) |  |  |  |  |  |  |  |
| विमर्श लिपि (स्वर मात्रा) |  |  |  |  |  |  |  |

| ऋ | ॠ | ऌ | ॡ |
|---|---|---|---|
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |

व्यंजन

| क वर्ग | क | ख | ग | घ | ङ |
|---|---|---|---|---|---|
| विमर्श लिपि | |  |  |  |  |
| | | | | | |
| च वर्ग | च | छ | ज | झ | ञ |
| विमर्श लिपि |  |  |  |  |  |
| | | | | | |
| ट वर्ग | ट | ठ | ड | ढ | ण |
| विमर्श लिपि |  |  |  |  |  |
| | | ड़ → |  |  ← | ढ़ |

| त वर्ग | त | थ | द | ध | न |
|---|---|---|---|---|---|
| विमर्श लिपि | | | |  | |
| प वर्ग | प | फ | ब | भ | म |
| विमर्श लिपि |  | |  |  | |
| अंतस्थ | य | र | ल | व | |
| विमर्श लिपि |  |  |  |  | |
| ऊष्माण | श | ष | स | ह | |
| विमर्श लिपि |  |  |  |  | |
| संयुक्त | क्ष | त्र | ज्ञ | | |
| विमर्श लिपि |  |  |  | | |

| ऋ | ॠ | ऌ | ॡ |
|---|---|---|---|
|  |  |  |  |

# विमर्श लिपि में चिन्ह

| | |
|---|---|
| पूर्ण विराम | |
| अल्प विराम | |
| इन्वर्टेड कोमा | |
| खाली स्थान |  |
| प्रश्न वाचक | |
| कोष्ठक | |
| डेस | |
| संक्षेप | |

विमर्श लिपि में शब्द के नीचे लाइन होती है।
चिन्ह भी लाइन पर ऊपर नीचे आगे–पीछे लगते हैं।

जैसे

| राम जाता है। | क्या राम जाता है? |
|---|---|
| | |

विमर्श लिपि

# उच्चारण

| क | का | कि | की | कु | कू | के | कै | को | कौ | कं | क: | कॅ | कॉ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | |
| ख | खा | खि | खी | खु | खू | खे | खै | खो | खौ | खं | ख: | खॅ | खॉ |
| | | | | | | | | | | | | | |
| ग | गा | गि | गी | गु | गू | गे | गै | गो | गौ | गं | ग: | गॅ | गॉ |
| | | | | | | | | | | | |  |  |
| घ | घा | घि | घी | घु | घू | घे | घै | घो | घौ | घं | घ: | घॅ | घॉ |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| ङ | ङा | ङि | ङी | ङु | ङू | ङे | ङै | ङो | ङौ | ङं | ङ: | ङॅ | ङॉ |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| च | चा | चि | ची | चु | चू | चे | चै | चो | चौ | चं | च: | चॅ | चॉ |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |

नोट–ऍ और ऑ ये मौलिक स्वर विमर्श लिपि में आये हुए हैं इनका उच्चारण स्थान कंठ स्वीकारा है।

विमर्श लिपि

# उच्चारण

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| छ | छा | छि | छी | छु | छू | छे | छै | छो | छौ | छं | छः | छॅ | छॉ |
|   | | | | | | | | | | | | | |
| ज | जा | जि | जी | जु | जू | जे | जै | जो | जौ | जं | जः | जॅ | जॉ |
|   | | | | | | | | | | | | | |
| झ | झा | झि | झी | झु | झू | झे | झै | झो | झौ | झं | झः | झॅ | झॉ |
|   | | | | | | | | | | | | | |
| ञ | ञा | ञि | ञी | ञु | ञू | ञे | ञै | ञो | ञौ | ञं | ञः | ञॅ | ञॉ |
|   | | | | | | | | | | | | | |
| ट | टा | टि | टी | टु | टू | टे | टै | टो | टौ | टं | टः | टॅ | टॉ |
|   | | | | | | | | | | | | | |
| ठ | ठा | ठि | ठी | ठु | ठू | ठे | ठै | ठो | ठौ | ठं | ठः | ठॅ | ठॉ |
|   | | | | | | | | | | | | | |

नोट–ऍं और ऑ ये मौलिक स्वर विमर्श लिपि में आये हुए हैं इनका उच्चारण स्थान कंठ स्वीकारा है।

# उच्चारण

| ड | डा | डि | डी | डु | डू | डे | डै | डो | डौ | डं | ड: | डॅ | डॉ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | |  |  |
| ढ | ढा | ढि | ढी | ढु | ढू | ढे | ढै | ढो | ढौ | ढं | ढ: | ढॅ | ढॉ |
| | | | | | | | | | | | |  |  |
| ण | णा | णि | णी | णु | णू | णे | णै | णो | णौ | णं | ण: | णॅ | णॉ |
| | | | | | | | | | | | |  |  |
| त | ता | ति | ती | तु | तू | ते | तै | तो | तौ | तं | त: | तॅ | तॉ |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| थ | था | थि | थी | थु | थू | थे | थै | थो | थौ | थं | थ: | थॅ | थॉ |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| द | दा | दी | दी | दु | दू | दे | दै | दो | दौ | दं | द: | दॅ | दॉ |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |

नोट–ऍ और ऑ ये मौलिक स्वर विमर्श लिपि में आये हुए हैं इनका उच्चारण स्थान कंठ स्वीकारा है।

विमर्श लिपि

# उच्चारण

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ध | धा | धि | धी | धु | धू | धे | धै | धो | धौ | धं | धः | धॅ | धॉ |
| | | | | | | | | | | | | | |
| न | ना | नि | नी | नु | नू | ने | नै | नो | नौ | नं | नः | नॅ | नॉ |
| | | | | | | | | | | | | | |
| प | पा | पि | पी | पु | पू | पे | पै | पो | पौ | पं | पः | पॅ | पॉ |
| | | | | | | | | | | | |  |  |
| फ | फा | फि | फी | फु | फू | फे | फै | फो | फौ | फं | फः | फॅ | फॉ |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| ब | बा | बि | बी | बु | बू | बे | बै | बो | बौ | बं | बः | बॅ | बॉ |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| भ | भा | भि | भी | भु | भू | भे | भै | भो | भौ | भं | भः | भॅ | भॉ |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |

नोट–ऍ और ऑ ये मौलिक स्वर विमर्श लिपि में आये हुए हैं इनका उच्चारण स्थान कंठ स्वीकारा है।

# उच्चारण

| म | मा | मि | मी | मु | मू | मे | मै | मो | मौ | मं | मः | मॅ | मॉ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | |
| य | या | यि | यी | यु | यू | ये | यै | यो | यौ | यं | यः | यॅ | यॉ |
| | | | | | | | | | | | | | |
| र | रा | रि | री | रु | रू | रे | रै | रो | रौ | रं | रः | रॅ | रॉ |
| | | | | | | | | | | | |  |  |
| ल | ला | लि | ली | लु | लू | ले | लै | लो | लौ | लं | लः | लॅ | लॉ |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| व | वा | वि | वी | वु | वू | वे | वै | वो | वौ | वं | वः | वॅ | वॉ |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| श | शा | शि | शी | शु | शू | शे | शै | शो | शौ | शं | शः | शॅ | शॉ |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |

नोट–ऍ और ऑ ये मौलिक स्वर विमर्श लिपि में आये हुए हैं इनका उच्चारण स्थान कंठ स्वीकारा है।

विमर्श लिपि

# उच्चारण

| ष | षा | षि | षी | षु | षू | षे | षै | षो | षौ | षं | षः | षॅ | षॉ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | |
| स | सा | सि | सी | सु | सू | से | सै | सो | सौ | सं | सः | सॅ | सॉ |
| | | | | | | | | | | | | | |
| ह | हा | हि | ही | हु | हू | हे | है | हो | हौ | हं | हः | हॅ | हॉ |
| | | | | | | | | | | | |  |  |
| क्ष | क्षा | क्षि | क्षी | क्षु | क्षू | क्षे | क्षै | क्षो | क्षौ | क्षं | क्षः | क्षॅ | क्षॉ |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| त्र | त्रा | त्रि | त्री | त्रु | त्रू | त्रे | त्रै | त्रो | त्रौ | त्रं | त्रः | त्रॅ | त्रॉ |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| ज्ञ | ज्ञा | ज्ञि | ज्ञी | ज्ञु | ज्ञू | ज्ञे | ज्ञै | ज्ञो | ज्ञौ | ज्ञं | ज्ञः | ज्ञॅ | ज्ञॉ |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |

नोट–ऍ और ऑ ये मौलिक स्वर विमर्श लिपि में आये हुए हैं इनका उच्चारण स्थान कंठ स्वीकारा है।

1

2   ॐ ॐ

3

4   

5   श्री श्री श्री श्री श्री

6 ६

7 ७

8 ८

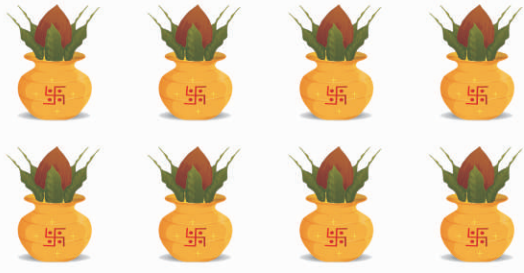

9 ९

10 १०

अनादि-अनिधन

# जिनागम पंथ जयवंत हो

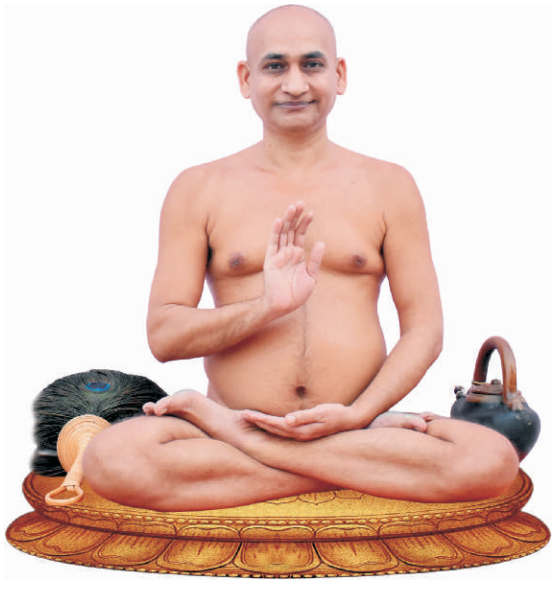

## ग्रंथ भेंटकर्ता परिवार

## जिनागम पंथी परिवार

**श्री बाबूलाल जी, सुनील कुमार जी, अनिल कुमार जी, अमित कुमार जी**
**कुशल जी, अभिषेक जी, प्रेरक, श्रेय जैन पाटनी**

# भावलिंगी संत : एक नजर

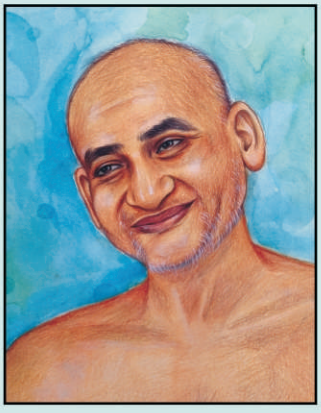

* प.पू. भावलिंगी संत, राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज एक ऐसे दिगम्बराचार्य हैं जिन्होंने पंथवाद के नाम पर बिखरती जैन समाज में अनादि-अनिधन 'जिनागम पंथ' का उद्घोष कर सामाजिक एकता का सूत्रपात किया है।

* जिनको सिद्धक्षेत्र अहार जी में अपनी निर्मल साधना से पंचमकाल में दुर्लभतम, शान्तिभक्ति की महान् सिद्धि प्राप्त हुई, यक्षों द्वारा की गई महापूजा, और नाम दिया 'भावलिंगी संत' एवं 'अहार जी के छोटे बाबा'।

* आचार्य भगवन् अमितगति स्वामी के 1000 वर्ष प्राचीन ग्रंथ ''श्री योगसार प्राभृत'' ग्रन्थ पर पूज्य गुरुदेव द्वारा प्राकृत भाषा में 'अप्पोदया'/'आत्मोदया' नामक वृहद टीका का सृजन किया गया है जो अपने आप में अनूठा इतिहास है।

* धर्म निरपेक्ष रूप से सम्पूर्ण भारत वर्ष में गुनगुनाई जाने वाली कालजयी रचना 'जीवन है पानी की बूँद' महाकाव्य के पूज्य श्री मूल रचनाकार हैं। गुरुदेव की इस कृति पर अनेक साधु-साध्वियों द्वारा नये-नये छंद जोड़े गये।

* पूज्य भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्शसागर जी ऐसे प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य है जिनकी रचना 'देश और धर्म के लिये जियो' को मध्यप्रदेश सरकार द्वारा कक्षा 11 की हिन्दी सामान्य की पुस्तक 'मकरंद' में एवं 'एक सुखद अनुभूतियों का एहसास-माँ' यह रचना कक्षा 8 की एटग्रेट अभ्यास पुस्तिका भाषा भारती में प्रकाशित किया गया है।

* प.पू. भावलिंगी संत ऐसे प्रथम जैनाचार्य हैं जिन्होंने मौलिक रूप से पूर्णता नवीन 'विमर्श एम्बिसा' भाषा का सृजन कर समस्त भाषा मनीषियों को प्रभावित किया है।

* पूज्य गुरुदेव ऐसे प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य हैं जिन्होंने अशोकनगर (म.प्र.) सन् 2011 में मौलिक रूप से 'विमर्श लिपि' का सृजन किया है।

* पूज्य आचार्य प्रवर के महनीय साहित्यिक अवदान पर 'थैम्स यूनिवर्सिटी' फ्रांस द्वारा आपको डी.लिट् की उपाधि से अलंकृत किया गया।

* देश की राष्ट्रवादी संस्था 'भारत विकास परिषद' शाखा बिजयनगर (राज.) द्वारा गुरुदेव को 'राष्ट्रयोगी' अलंकरण से अलंकृत किया गया।

वर्तमान श्रमण संस्था में पूज्य गुरुदेव के संघ का अनुशासन प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है।

**website : www.bhavlingisant.com**
**youtube : Jinagam Panth Channel**

कहो गर्व से हम जिनागम पंथी हैं।

ISBN:978-93-341-5262-3

सच्चे जैन का एक ही पंथ-जिनागम पंथ

जयदु जिणागम पंथो

जिनागम पंथ जयवंत हो

जिनागम पंथ, प्रकाशन

...शास्त्र विक्रय... ज्ञानावरणस्यास्रवा:
शास्त्र विक्रय ज्ञानावरण कर्म के आस्रव का कारण है।
(आचार्य अकलंक देव, राजवार्तिक)

**NOT FOR SALE**